17:10
5_61159206994...

5. अथर्ववेद

- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद।' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान। वेदों की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के 'अथर्व' शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। निरुक्त के अनुसार '**थर्व**' धातु गत्यर्थक है और अथर्व का अर्थ है- गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त। अर्थात् जिसमें चित्त में स्थिरता एवं दृढ़ता लाई जा सके। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है कि- समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना।
- पाणिनीय धातु पाठ में '**थर्वी**' धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है। अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया।
- अथर्ववेद में विभिन्न ऋषियों के दृष्टमन्त्र हैं तथा अनेक विषयों का प्रतिपादन है, अतः इसके अनेक नाम पड़े हैं। अथर्ववेद तथा अन्य ग्रन्थों में अथर्ववेद के ये नाम प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद की शाखाएँ-

- पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽथर्वणो वेदः' कहकर इस वेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं- 1. पैप्पलाद 2. तौद (स्तौद) 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
- प्रपंचहृदय, चरणव्यूह और सायण की अथर्ववेद-भाष्य भूमिका में भी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
- इसमें केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा उपलब्ध होती है।

अथर्ववेद के उपवेद

- गोपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद के 5 उपवेद का उल्लेख है-

  1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5.पुराणवेद

अथर्ववेद के अपर नाम

- ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृग्वंगिरोवेद

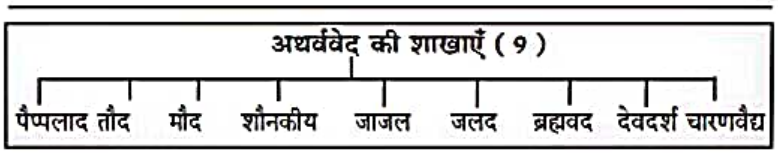

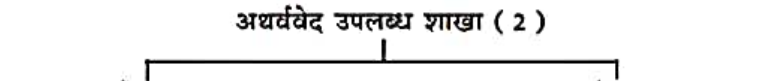

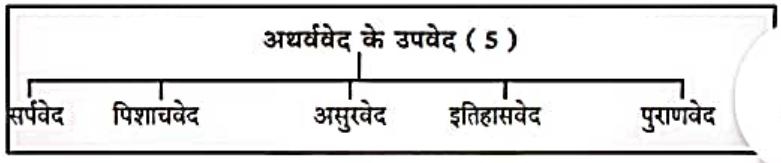

अथर्ववेद की शाखाओं के उल्लेखकर्त्ता

पतञ्जलि (महाभाष्य)	चरणव्यूह	प्रपंचहृदय	सायण
(9)	(9)	(9)	(9)

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

पैप्पलाद	शौनकीय
1. पिप्पलाद ऋषि के नाम पर नामकरण	1. वर्तमान में प्रचलित अथर्ववेद संहिता यही है।
2. एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि	2. 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र
3. प्रपञ्चहृदय माट ने 20 काण्ड बताया	3. सबसे बड़ा-काण्ड-20वाँ (958 मन्त्र)
	4. सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ (30 मन्त्र)
	5. गोपथ ब्राह्मण इसी शाखा से है।

अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

1. शौनकीय शाखा (शौनक)

- आजकल प्रचलित अथर्ववेद संहिता शौनकीय शाखा ही है ।
- इसमें 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।
- इसमें सबसे बड़े तीन काण्ड हैं -काण्ड-20 (958 मन्त्र)
  काण्ड- 6 (454 मन्त्र)
  काण्ड-19 (453 मन्त्र)
- सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ काण्ड है (30 मन्त्र)

2. पैप्पलाद शाखा

- पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ पैप्पलाद।
- इस शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है।
- इस शाखा की एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी।
- तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई0 में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डा0 राय को उपहार रूप में दी।
- प्रपञ्चहृदयकार ने पैप्पलाद शाखा का संकेत किया है। उन्होंने पैप्पलाद शाखा को 20 काण्डों का बताया।
- 1901 ई0 में अमेरिका में इसकी फोटो स्टेट प्रति छपी, बाद में डॉ0 रघुवीर ने भी इसका सुन्दर संस्करण प्रकाशित किया ।
- पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्य काल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।
- अथर्ववेद के देवता-सोम
- अथर्ववेद के ऋषि- अथर्वा ऋषि
- अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

अथर्ववेद के महत्त्वपूर्ण सूक्त

1. पृथिवीसूक्त (12वाँ काण्ड)
2. ब्रह्मचर्य सूक्त (11वाँ काण्ड)
3. काल सूक्त (19वाँ काण्ड)
4. विवाह सूक्त (14वाँ काण्ड)
5. व्रात्य सूक्त (15वाँ काण्ड)
6. मधुविद्या सूक्त (9वाँ काण्ड)
7. ब्रह्मविद्या सूक्त
8. रोहित सूक्त (13वाँ काण्ड)
9. कौशिक सूक्त
10. आयुष्यकर्म सूक्त
11. भैषज्यकर्म सूक्त
12. आरोग्य मन्त्र सूक्त
13. पौष्टिक मन्त्र
14. शान्ति सूक्त
15. प्रकीर्ण सूक्त

अथर्ववेद

देवता	ऋषि	ऋत्विक्

17:11
5_61159206994...

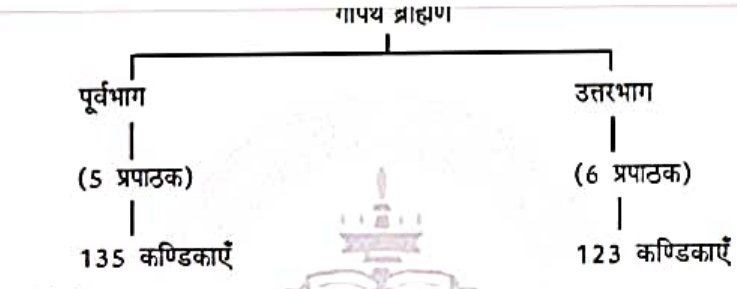

गोपथ ब्राह्मण

- पूर्वभाग — (5 प्रपाठक) — 135 कण्डिकाएँ
- उत्तरभाग — (6 प्रपाठक) — 123 कण्डिकाएँ

अथर्ववेदीय-ब्राह्मण

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- गोपथ ब्राह्मण पैप्पलाद शाखा से संबद्ध है।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र- 'शं नो देवीरभिष्टये' है।
- गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) उत्तरभाग (6 प्रपाठक) = 11 प्रपाठक हैं।
- पूर्व गोपथ ब्राह्मण में 135 कण्डिकाएँ हैं। उत्तर गोपथ ब्राह्मण में 123 कण्डिकाएँ। कुल मिलाकर गोपथ ब्राह्मण में 11 प्रपाठक 258 कण्डिकाएँ हैं। अथर्ववेद का आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय उपनिषद्

- अथर्ववेद के उपलब्ध उपनिषद् तीन हैं –
  (1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है जो सम्पूर्ण गद्यमय है।
- पिप्पलाद ऋषि अपने छह शिष्य ऋषियों द्वारा पूछे गए अध्यात्म विषयक प्रश्नों का समुचित उत्तर देते हैं इन प्रश्नों के कारण ही इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।

- छह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं-

1. कबन्धी कात्यायन	2. भार्गव वैदर्भि	3. कौसल्य आश्वलायन
4. सौर्यायणी	5. शैव्यसत्यकाम	6. सुकेशा भारद्वाज

अथर्ववेदीय उपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्	मुण्डक उपनिषद्	माण्डूक्य उपनिषद्
(सम्पूर्ण गद्यमय) * पिप्पलाद ऋषि द्वारा छः शिष्यों को आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देना * इसी कारण प्रश्न उपनिषद् नाम पड़ा	(3 मुण्डक) * हर मुण्डक 2-2 *खण्डों में 'सत्यमेव जयते' महावाक्य * 'द्वा सुपर्णा सयुजा' मन्त्र * 'वेदान्त' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	(लघुकाय) * कुल 12 वाक्य। खण्ड ऋचा कण्डिका *ॐकार का विशेष वर्णन * ब्रह्म की चार अवस्थाएं वर्णित * चतुष्पाद आत्मा का वर्णन

2. मुण्डकोपनिषद्

- अथर्ववेदीय मुण्डकोपनिषद् कुल तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है।
- यह मुण्डक अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित है।
- इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उ दिया है।
- प्रसिद्ध वाक्य **'सत्यमेव जयते'** इसी उपनिषद् में है।
- द्वैतवाद का प्रतिपादक **"द्वा सुपर्णा सयुजा"** मन्त्र इसी उपनिषद् का है।

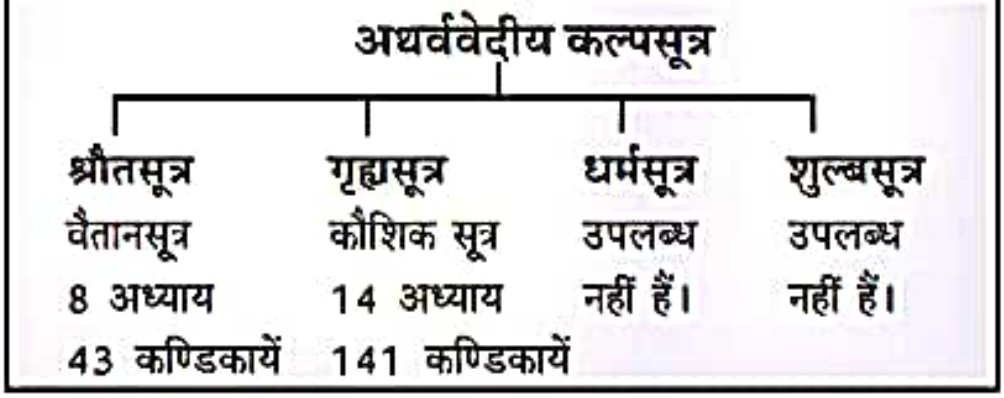

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का वैतान श्रौतसूत्र ही उपलब्ध है।
  वैतान श्रौतसूत्र - ब्रह्मा के सभी कर्तव्य, इस श्रौतसूत्र के पहले ही अध्याय में दर्शपूर्ण मास के विवरण में प्रतिपादित हैं।
- यह श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।
- ये श्रौत कर्म बतलाए गए हैं- दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, उक्थ्य, षोडशी अतिरात्र, वाजपेय, अग्निचयन, राजसूय आदि।

अथर्ववेदीय-गृह्यसूत्र

- अथर्ववेद का एक मात्र गृह्यसूत्र कौशिक (कौशिकसूत्र) उपलब्ध है।
- कौशिक गृह्यसूत्र का अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से विशेष सम्बन्ध है।
- इसका विभाजन 14 तथा 141 कण्डिकाओं में हुआ है।
- शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का विशद विवेचन है।
- इसमें प्रायः प्रायश्चित्त कर्म और भविष्यवाणी का विशद विवेचन है।
- कौशिक सूत्र को 'संहिता विधि' या **'संहिता कल्प'** संज्ञा प्राप्त है।
- अथर्ववेद का धर्मसूत्र नहीं उपलब्ध है।
- अथर्ववेद का शुल्बसूत्र नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय शिक्षा ग्रन्थ

- अथर्ववेद का केवल एक शिक्षाग्रन्थ है – **माण्डूकी शिक्षा**
- यह श्लोकात्मक है।
- साम स्वरों का इसमें विशद विवेचन है। इसमें कुल 179 श्लोक हैं।
- अथर्ववेद के स्वरों तथा वर्णों को भली-भाँति जानने के लिए यह शिक्षा उपयोगी है।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद के दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
  * शौनकीय चतुरध्यायिका
  * अथर्ववेद प्रातिशाख्य

1. शौनकीय चतुरध्यायिका

- इसके लेखक शौनक हैं।
- इसमें चार अध्याय हैं और सूत्रसंख्या 434 है।
- 1. ध्वनि विचार 2. सन्धि विवेचन 3. संहिता पाठ में दीर्घत्व, द्वित्व, णत्व, स्वरसन्धि। 4. अवग्रह, प्रगृह्य आदि का विवेचन।
- यही सबसे प्राचीन अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य है।
- इसका इंग्लिश अनुवाद के सहित संस्करण डॉ0 व्हिटनी ने प्रकाशित किया है।
  * प्रथम अध्याय में 105 सूत्र
  * द्वितीय अध्याय में 107 सूत्र
  * तृतीय अध्याय में 96 सूत्र
  * चतुर्थ अध्याय में 126 सूत्र

2. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- यह प्रपाठकों में विभक्त है।
- प्रपाठक पुनः पादों तथा सूत्रों में विभक्त हैं।
- प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
- द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में चार चार पाद हैं।
- कुल सूत्र संख्या 221 है।
- इस प्रातिशाख्य में सन्धि,स्वर तथा पदपाठ के नियम बताये गए हैं।
- जिनमें स्वरों का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है।
- डॉ. सूर्यकान्त ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया था।

- इस ग्रन्थ की भाषा शैली सूत्रात्मक है।
- इस प्रातिशाख्य ग्रन्थ में अथर्ववेद के उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी उल्लेख है।

अथर्ववेद के भारतीय भाष्यकार

दुर्गादास लाहिड़ी

- सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद (शौनक शाखा) को 5 भागों में प्रकाशित किया।

शंकर पाण्डुरंग -

- अथर्ववेद का सायण भाष्य-सहित संस्करण 4 भागों में निकाला था (बम्बई 1898 ई.)
- यह बहुत शुद्ध संस्करण है।

सातवलेकर

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय) 1943 ई0 में प्रकाशित की।
- इन्होंने 'अथर्ववेद' का सुबोध-भाष्य 5 भागों में प्रकाशित किया।
- इन्हें आधुनिक युग का 'सायण' कहा जाता है।
- यह अथर्ववेद का सर्वोत्तम व्याख्या ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ श्री सातवलेकर के अगाध वेदज्ञान और अथक परिश्रम का परिचायक है।

क्षेमकरण त्रिवेदी

- सम्पूर्ण ऋग्वेद का हिन्दी भाष्य किया है।

जयदेव विद्यालंकार

- सम्पूर्ण अथर्ववेद का हिन्दी भाष्य किया ।

श्रीरामशर्मा

- इन्होंने इसे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है।

विश्वबन्धु-

- सायण भाष्य सहित अथर्ववेद 5 भागों में निकाला है।

भगवद्दत्त

- अथर्ववेदीय पंचपटलिका और माण्डूकी शिक्षा पर भाष्य टीका लिखी

विश्वबन्धु-

- अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य और अथर्ववेदीय बृहत् सर्वानुक्रमणी पर भाष्यटीका लिखी –
- गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य लिखा - **राजेन्द्र लाल मिश्र**

क्षेमकरण त्रिवेदी -

- गोपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया।

डॉ0 विजयपाल शास्त्री-

- गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य मिलता है।

अथर्ववेदीय पाश्चात्त्य विद्वान्

रोठ और ह्विटनी

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम संपादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूम फील्ड और गार्बे

- अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) की एक अति जीर्ण काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 ई0 में छपवाई।

कैलेण्ड-

- अथर्ववेद- संहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया।

ग्रिफिथ-

- अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895-1898 में छपवाया था।

ह्विटनी और लानामान-

- अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त है।
- जो 1905 ई0 में दो भागों में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड

- पैप्पलाद संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1901 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण के पाश्चात्त्य अनुवादक

गास्ट्रा-

- गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्त्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

- अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेद संहिता -एक दृष्टि में

- **आचार्य** - सुमन्तु, **ऋषि**-अथर्वा, **ऋत्विक्**- ब्रह्मा
- **उपवेद**- पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद
- **अपरनाम** - ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, भिषग्वेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, आंगिरसवेद, भृग्वंगिरो वेद
- **विभाजन**- 20 काण्ड
- **उत्पत्ति देवता**- सोम

- **शाखायें-**
  - पैप्पलाद
  - मौद
  - जाजल
  - ब्रह्मवद
  - चारणवैद्य
  - तौद
  - शौनकीय
  - जलद
  - देवदर्श
- **उपलब्ध शाखा**- पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)
- **ब्राह्मण**- गोपथ ब्राह्मण
- **आरण्यक**- नहीं है (उपलब्ध नहीं)
- **उपनिषद्**- प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
- **श्रौतसूत्र**- वैतान श्रौतसूत्र
- **गृह्यसूत्र**- कौशिक गृह्यसूत्र
- **धर्मसूत्र**- उपलब्ध नहीं
- **शुल्बसूत्र**- उपलब्ध नहीं
- **शिक्षा**- माण्डूकी शिक्षा
- **प्रातिशाख्य**- 1. शौनकीय चतुरध्यायिका
  2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित

17:12

5_61159206994...

गास्ट्रा-

- गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई० में प्रकाशित किया।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

- अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई० में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेद संहिता -एक दृष्टि में

- **आचार्य** - सुमन्तु, **ऋषि**-अथर्वा, **ऋत्विक्**- ब्रह्मा
- **उपवेद**- पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद
- **अपरनाम** - ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, भिषग्वेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, आंगिरसवेद, भृग्वंगिरो वेद
- **विभाजन**- 20 काण्ड
- **उत्पत्ति देवता**- सोम

- **शाखायें**-
  - पैप्पलाद
  - मौद
  - जाजल
  - ब्रह्मवद
  - चारणवैद्य
  - तौद
  - शौनकीय
  - जलद
  - देवदर्श
- **उपलब्ध शाखा**- पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)
- **ब्राह्मण**- गोपथ ब्राह्मण
- **आरण्यक**- नहीं है (उपलब्ध नहीं)
- **उपनिषद्**- प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
- **श्रौतसूत्र**- वैतान श्रौतसूत्र
- **गृह्यसूत्र**- कौशिक गृह्यसूत्र
- **धर्मसूत्र**- उपलब्ध नहीं
- **शुल्वसूत्र**- उपलब्ध नहीं
- **शिक्षा**- माण्डूकी शिक्षा
- **प्रातिशाख्य**- 1. शौनकीय चतुरध्यायिका
  2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित
3. सातवलेकर
4. क्षेमकरण त्रिवेदी
5. जयदेव विद्यालंकार
6. श्रीराम शर्मा
7. विश्वबन्धु
8. डॉ० रघुवीर
9. भगवद् दत्त
10. डॉ० विजयपाल शास्त्री
11. राजेन्द्र लाल मिश्र

पाश्चात्य अनुवादक

1. रोठ और ह्विटनी
2. ब्लूमफील्ड और गार्वे
3. कैलेन्ड
4. ग्रिफिथ
5. ह्विट्नी और लानमान
6. गास्ट्रा